A Pratibha Spandan's Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

संगीत के क्षेत्र में इंटरनेट की भूमिका

Dr. Sudha Sharma
Assistant Professor, Music Department (Instrumental), Saroop Rani Government College, Amritsar

सारांश

इंटरनेट के कारण जिस प्रकार समाज के विभिन्न पक्षों राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं मनोरंजन के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन आए हैं, वह काफी आश्चर्यचकित हैं। इंटरनेट ने पूर्ण रूप से हमारी कार्यशैली का स्वरुप ही बदल दिया है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह हैं कि इसके माध्यम से दुनिया में कहीं भी किसी के साथ बहुत ही कम समय में तुरंत संवाद किया जा सकता है। वास्तव में इंटरनेट विश्व भर की सूचनाओं का अथाह भंडार है। संगीत कला एवं शिक्षा भी इसके प्रभाव से अछूती नहीं है। संगीत के क्षेत्र में इसका प्रयोग एवं महत्व दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है। इंटरनेट के माध्यम से संगीत के केवल क्रियात्मक पक्ष ही नहीं अपितु सैद्धांतिक पक्ष का ज्ञान भी भलीभांति प्राप्त किया जा सकता है। संगीत से संबंधित बहुत सी वैबसाइटस, यू-टयूब चैनल, अनगणित पुस्तकों की पी.डी.एफ., आडियो, वीडियो, बड़े-बड़े कलाकारों के साक्षात्कार उनकी कला का प्रस्तुतिकरण इत्यादि अपार सामग्री उपलब्ध है। अतः कहा जा सकता है कि इंटरनेट के माध्यम से संगीत विषय की जानकारी हम घर पर बैठ कर ही प्राप्त कर सकते हैं। आज इंटरनेट से विद्यार्थी, शिक्षार्थी, शोधार्थी, व्यापारी इत्यादि सभी श्रेणी के लोगों ने नाता जोड़ा है। प्रस्तुत शोध पत्र में शिक्षण प्रणाली के अंतरगत आधुनिकी प्रौद्योगिकी के विभिन्न साधनों को प्रयोग में लाने एवं उसके सकारात्मक प्रभावों के विषय पर विश्लेषणात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। इस शोध पत्र के लेखन कार्य में शब्द कोश एवं विषय से संबंधित पुस्तकों के पठन-पाठन विधि का प्रयोग किया गया है।

मुख्य बिन्दुः *प्रौद्योगिकी, इंटरनेट, मोबाइल ऐप्स, ई-पुस्तकाल्य, आनलाइन संगीत शिक्षा।*

भूमिका

पिछले कुछ वर्षों में डिजीटल तकनीकी का उपयोग काफी बढ़ गया है। वर्तमान युग को अगर तकनीकी युग कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति न होगी और इस तकनीकी युग की पहली शर्त तीव्र गति है। तकनीक है क्या? समाज विज्ञान विश्वकोष में तकनीकी की परिभाषा इस प्रकार दी गई है "समाज के अन्तर्गत पाए जाने वाले ऐसे दस्तूर, औज़ार, सामान, ज्ञान या प्रविधि, जिसके प्रयोग या माध्यम से किसी समस्या को सुलझाने या प्रकृति के शोषण एवं दोहन में उपयोग किया जाता है।"[1] तकनीकी के प्रार्यायवाची शब्द अभियान्त्रिकी, प्रौद्योगिकी इत्यादि हैं। "प्रौद्योगिकी का अभिप्राय प्रर्यावरण को नियंत्रित, परिवर्तित एवं आर्थिक उपयोगी बनाने तथा जीवन को सुविधा एवं स्थायित्व प्रदान करने के लिए किसी व्यक्ति द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले उपकरणों से है। विकास का प्रौद्योगिकी से घनिष्ठ संबंध है। विकास के जिस स्तर पर विश्व आज पहुँचा है, वह प्रौद्योगिकी की उन्नति से ही संभव हुआ।"[2]

समाज में ऐसा कोई क्षेत्र नहीं, जिसको प्रौद्योगिकी अर्थात तकनीकी ने प्रभावित न किया हो। कला, शिक्षा, कृषि, उद्योग, व्यवसाय, चिकित्सा इत्यादि सभी क्षेत्र आधुनिक प्रौद्योगिकी से प्रभावित हैं और समाज का यह विकास प्रौद्योगिकी की आधुनिनक इंटरनेट प्रणाली से संभव हुआ है। वर्तमान समय में किसी भी छोटे से लेकर बड़े काम को करने के लिए आधुनिक तकनीकों को सीखना अति आवश्यक है। आज इंटरनेट प्रत्येक व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकता बन चुका है। यह किसी भी व्यक्ति को विश्व की प्रत्येक महत्वपूर्ण सूचना प्रदान करने की अदभुत सुविधा प्रदान करता है।

"विभिन्न कंप्यूटरों के बीच जो वैश्विक संबंध सूचनाओं के आदान प्रदान के लिए स्थापित होते हैं, इसे ही इंटरनेट कहा जाता है। इसे 20वीं सदी की सबसे क्रांतिकारी उपलब्धि के रुप में देखा जा सकता है।"[3] "इंटरनेट का आविष्कार सन् 1969 में हुआ था। उस समय इसे अर्पानेट अथवा ऐडवांस्ड रिसर्च प्रोजेक्ट ऐजेन्सी नेटवर्क कहा जाता था। अर्पानेट का मुख्य उपयोग सेना के हेतु किया जाता था। किन्तु बाद में इसे सामाजिक और शैक्षिक कार्यों के लिए भी प्रयोग में लिया जाने लगा। सन् 1979 में इस संचार व्यवस्था को इंटरनेट के नाम से जाना जाने लगा।"[4]

संगीत के क्षेत्र में भी इंटरनेट की भूमिका महत्वपूर्ण है। संगीत के प्रचार प्रसार में यह काफी सहायक सिद्ध हुआ है। आज इंटरनेट पर अनेकों ऐसी ऐप्स, वेबसाईटस हैं, जिनके प्रयोग से संगीत से जुड़े विद्यार्थी एवं शिक्षार्थी दोनों भरपूर लाभ उठा रहे हैं। यह ऐप्स आधुनिक स्मार्ट फोन पे निःशुल्क हैं और उपयोग करने में भी काफी आसान हैं। यह मोबाईल मीडीया ऐप्स उपयोग करने में बहुत फायदेमंद हैं और लगभग सभी के लिए लाभप्रद, भी हैं। संगीत के प्रचार प्रसार में इंटरनेट का प्रयोग किस प्रकार से हुआ है इसका विवरण निम्नलिखित है-

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

1. **टेलीग्राम एवं व्हाटस ऐप**

यह दोनों त्वरित संदेश संचार ऐप्स हैं जो कि उपभोगकर्ताओं के मध्य तुरंत संदेश भेजने का कार्य करती हैं। इनका उद्देश्य कई व्यक्तियों के साथ सामूहिक रुप से बातचीत करना एवं उनके साथ कोई भी जानकारी सांझा करना होता है। टेलीग्राम एवं व्हाटस ऐप पर बहुत से ऐसे संगीत संबंधी समूह हैं, जिनमें इस विषय से संबंधित जानकारी, आडियो-वीडियो एवं लिखित संदेश के माध्यम से सांझा की जाती है। समय समय पर इन समूहों में विभिन्न स्थानों पर आयोजित होने वाले सांगीतिक कार्यक्रम, सेमिनार, कार्यशाला इत्यादि की सूचनाएं भी प्राप्त होती रहती हैं जिस कारण संगीत के विद्र्यार्थियों एवं शिक्षार्थियों में सांगीतिक सूचनाओं के प्रति चैकस की भावना भी बनी रहती है। विभिन्न स्थानों पर रहने वाले संगीत के क्षेत्र के लोगों को आपस में जोड़ने एवं देश विदेश में संगीत के प्रचार-प्रसार का यह सशक्त माध्यम हैं।

2. **आनलाईन मींटिग ऐप्स**

आजकल आनलाईन मींटिग ऐप्स जैसे कि गूगल मीट, जूम मीट इत्यादि के माध्यम से विभिन्न विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों के द्वारा विद्यार्थियों के हित हेतु बहुत से सेमिनार वैबिनार, कानफरेंसिस कार्यशाला इत्यादि का आयोजन करवाया जा रहा है। जिससे संगीत ही नहीं अपितु और भी विषयों के विद्यार्थी इन आयोजनों से लाभान्वित हो रहे हैं। बहुत से विश्वविद्यालयों एवं संगीत संस्थानों द्वारा विभिन्न सांगीतिक बैठको एवं आनलाईन लेक्चर सीरीज़ की शुरुआत भी की है जैसे राष्ट्रीय संगीतज्ञ परिवार की ओर से राष्ट्रीय संगीत संवाद एवं फेकल्टी आफ परफोमिंग आरटस आफ एम.एस.यू. बड़ौदा की तरफ से विभिन्न सांगीतिक विषयों पर संवाद इत्यादि इसके साक्षात उदाहरण हैं। यह सांगीतिक आयोजन साप्ताहिक एवं मासिक कार्यक्रमों पर आधारित होते हैं। इसके अतिरिक्त विद्यार्थी संगीत की शिक्षा इन ऐप्स के माध्यम से ग्रहण कर रहे हैं। केवल क्रियात्मक ही नही अपितु संगीत के सैद्धांतिक पक्ष की तैयारी भी विद्यार्थी आनलाईन ऐप्स के माध्यम से ले रहे हैं। बहुत से ऐसे आनलाईन संगीत की कक्षाएं हैं जिनमें पंजीकरण करवा के संगीत के साहित्यक पक्ष की शिक्षा देकर विद्यार्थियों को प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए तैयारी करवाई जाती है।

3. **ई पुस्तकाल्य एवं जनरलस**

वह पुस्तकाल्य जिसमें डिजीटल रुप से विभिन्न विषयों से संबंधित अध्ययन सामग्री पाठकों को उपलब्ध करवाई जाती है। ऐंड्रायड फोन, कंप्यूटर या लैपटाप पर इंटरनेट के माध्यम से विश्व भर की किताबें कहीं भी, कभी भी बैठ कर पढ़ी जा सकती हैं। इंटरनेट पर ई-लाईब्रेरी की बहुत सी ऐसी वैबसाईटस जैसे epustaalay.com, openlibrary.org, musicresearchlibrary.net इत्यादि उपलब्ध हैं जिसका प्रयोग करके विद्यार्थी अपने विषय से संबंधित पुस्तकों का लाभ प्राप्त कर सकता है। इन ई-पुस्तकाल्यों में विभिन्न पुस्तकें पी.डी.एफ के रुप में उपलब्ध होती हैं, जिसे निःशुल्क डाऊनलोड भी किया जा सकता है। इसी तरह वह सभी पत्र पत्रिकाएं जो कि आनलाईन ही मुद्रित एवं वितरित की जाती हैं वह ई-पत्रिकाओं की श्रेणी में आती हैं। आज प्रत्येक विषय पर आधारित विभिन्न प्रकार के ई-जनरलस की संख्या एवं महत्व बढ़ता जा रहा है।

4 ई-मेल

इसे इलेक्ट्रोनिक मेल भी कहते हैं। यह वह प्रणाली है जिसमें अधिकृत रुप से इंटरनेट के माध्यम से एक दूसरे को संदेश भेजा जा सकता है। एक ही संदेश अनेक उपभोगकर्ताओं तक एक साथ भेजने के लिए उपयुक्त ई-मेल पता होना अति आवश्यक है। ई-मेल के माध्यम से संगीत से संबंधित पत्र, प्रमाण पत्र एवं उचित सामग्री का आदान प्रदान किया जा सकता है। किसी भी आवश्यक सूचना को क्षण भर में अधिकृत रुप से भेजा जा सकता है। इससे न केवल समय की अपितु धन की भी बचत की जा सकती है। यदि हम अपने अतीत की तरफ ध्यान दें, जिसमें संचार की क्रिया बहुत ही धीमी थी परन्तु आज यह कहना अनुचित न होगा कि मानव ने संचार के क्षेत्र में कबूतर से कंप्यूटर तक की यात्रा को सफलतापूर्वक तय कर लिया है। इसका श्रेय केवल इंटरनेट एवं विकसित प्रौद्योगिकी यंत्रों को ही जाता है।

5. **यू-ट्यूब चैनल**

आधुनिक समय में यू-ट्यूब केवल एक जनमनोरंजन का साधन ना रह कर एक ऐसा प्लेटफार्म बन चुका है, जिसके माध्यम से लोग (धर्म, चिकित्सा, फिटनेस, कला इत्यादि) किसी भी प्रकार का ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं। प्रत्येक वर्ग का व्यक्ति इसके माध्यम से कुछ न कुछ लाभ प्राप्त कर रहा है। आज कुछ भी सीखने के लिए हमें बाहर जाने की आवश्यकता नहीं। घर में बैठ कर ही हम यू-ट्यूब के माध्यम से बहुत कुछ सीख सकते हैं। संगीत की शिक्षा ग्रहण करने एवं प्रदान करते हेतु डिजीटल मीडिया का प्रभाव ज्यादा बढ़ रहा है। यू-टयूब पर अनगिणत वीडियोज़ इसका साक्षात उदाहरण हैं। विद्यार्थी किसी भी प्रकार की गायन शैली या किसी भी प्रकार के वाद्य की शिक्षा प्राप्त करने का इच्छुक हो, उसे यू-ट्यूब पर अनेकों ट्यूटोरियल वीडियो मिल जायेगे जिसके माध्यम से वह संगीत विषय का ज्ञान प्राप्त कर सकता है।

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

6. **स्ट्रीमिंग प्लेटफार्मस**

स्पोटिफाई जैसे स्ट्रीमिंग प्लेटफार्मस ने संगीत को विश्व स्तर पर सुलभ बनाकर संगीत उद्योग में क्रांति ला दी है, जिससे कलाकारों को भौगोलिक सीमाओं के पार दर्शकों तक पहुंचने में सक्षम बनाया गया है, जबकि श्रोताओं को संस्कृतियों और शैलियों में फैली एक विविध लाइब्रेरी प्रदान की है। क्यूरेटेड और उपयोगकर्ता-जनित गीत सूची के माध्यम से, यह विशेष रूप से उभरते और स्वतंत्र कलाकारों के लिए खोज क्षमता को बढ़ाता है, जो अब प्रमुख लेबल पर भरोसा किए बिना अपना संगीत वितरित कर सकते हैं। उचित मुआवजे के बारे में चल रही बहस के बावजूद, मंच कलाकारों को विस्तृत विश्लेषण के साथ राजस्व धारा की पेशकश करते हुए रिलीज और दौरों की रणनीति बनाने के लिए सशक्त बनाता है। स्पोटिफाई इत्यादि स्ट्रीमिंग प्लेटफार्मस पारंपरिक और विशिष्ट शैलियों को संग्रहीत करके और पॉडकास्ट और क्यूरेटेड सामग्री के माध्यम से संगीत शिक्षा को बढ़ावा देकर सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके एआई-संचालित वैयक्तिकरण और मूड-आधारित प्लेलिस्ट सुनने की आदतों को आकार देते हैं, गहरी सहभागिता को बढ़ावा देते हैं और संगीत को रोजमर्रा की गतिविधियों से जोड़ते हैं। शैली मैशअप और रचनात्मक सहयोग जैसे नवाचारों का समर्थन करके, स्ट्रीमिंग प्लेटफार्मस न केवल पहुंच को लोकतांत्रिक बनाते हैं बल्कि प्रयोग को भी बढ़ावा देते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि संगीत एक जीवंत और विकसित कला रूप बना रहे।

7. **आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई)**

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) अपने निर्माण, वितरण और खपत में परिवर्तन लाने के तरीकों में योगदान देकर संगीत उद्योग में क्रांति ला रहा है। aiva और musenet जैसे एआई उपकरण स्वचालित संगीत रचना को सक्षम करते हैं, कलाकारों को नए संगीत और विचारों की पेशकश करते हैं, जबकि landr जैसे प्लेटफॉर्म मिश्रण और मास्टरिंग को सरल और पेशेवर बनाते हैं। स्पोटिफाई और यूट्यूब म्यूजिक जैसी स्ट्रीमिंग सेवाएं एआई का उपयोग व्यक्तिगत सिफारिशें प्रदान करने के लिए, संगीत की खोज को बढ़ाने के लिए करती हैं। एआई पुरानी या क्षतिग्रस्त रिकॉर्डिंग, सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने, और वर्चुअल कलाकारों और प्रदर्शनों को शक्ति देने, इंटरएक्टिव और इमर्सिव एक्सपीरियंस बनाने का काम करता है। यूसीशियन और फ्लोकी जैसे ऐप संगीत शिक्षा को व्यक्तिगत करते हैं, जो इसे सुलभ और अनुकूल बनाते हैं। एआई वास्तविक समय के दृश्य प्रभावों के साथ लाइव प्रदर्शन को समृद्ध करता है और वैश्विक दर्शकों तक पहुंचने के लिए आभासी संगीत कार्यक्रमों की सुविधा प्रदान करता है। यह दर्शकों की प्राथमिकताओं के साथ तालमेल बिठाने के लिए कलाकारों का समर्थन करने वाले रुझान की भविष्यवाणी करने के लिए श्रोता डेटा का विश्लेषण भी करता है। संगीत चिकित्सा में, एआई शिथिलता और भावनात्मक कल्याण के लिए व्यक्तिगत रचनाओं का निर्माण करता है। कॉपीराइट प्रबंधन और रॉयल्टी वितरण को सुव्यवस्थित करता है। इस प्रकार, एआई मौलिक, प्रामाणिकता और नैतिक उपयोग के बारे में महत्वपूर्ण सवाल उठाते हुए संगीत को नई ऊंचाइयों पर ले जा रहा है।

उपसंहार

संगीत के प्रचार प्रसार व विकास में इंटरनेट की अहम भूमिका है। संगीत शुरु से ही गुरु शिष्य परंपरा पर आधारित रहा है और वर्तमान समय में वैज्ञानिक युग ने यह कार्य बहुत ही आसान बना दिया है। आज आनलाइन संगीत शिक्षा में तेजी से वृद्धि लाने के लिए विभिन्न प्रौद्योगिकी विधियां विकसित हो रही हैं। नामवर कलाकार भी आनलाइन शिक्षा प्रदान करने के लिए डिजीटल मीडिया को माध्यम बना रहे हैं। अंत में कहा जा सकता है कि भविष्य का युग इंटरनेट का युग होगा। जिसमें प्रत्येक देश का व्यापार, शिक्षा, चिकित्सा, कृषि इत्यादि विभिन्न क्षेत्रों का विकास तो निश्चय ही होगा साथ ही प्रत्येक क्षेत्र में सफलता की अपार संभावनाएं होगी।

संदर्भ

1. सिंह जे.पी, समाज विज्ञान विश्वकोष, पी.एच.आई. लेनिंग प्राईवेट लिमिटड, नई दिल्ली, 2009, पृ. 641.
2. सिंह, शिवबहाल, विकास का समाज शास्त्र, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2016, पृ. 124.
3. सिंह जे.पी, समाज विज्ञान विश्वकोष, पी.एच.आई. लेनिंग प्राईवेट लिमिटड, नई दिल्ली, 2009, पृ. 324.
4. गोयल एम.एम, कंप्यूटर क्रांति (एक परिचय), अनुप्रिया पब्लिंशिग हाऊस, जयपुर, 2002, पृ. 110-111.
5. https://fpgainsights.com/artificial-intelligence/ai-in-music/
6. Alaeddine, M., & Tannoury, A. (2021). Artificial intelligence in music composition. In IFIP advances in information and communication technology (pp. 387–397). https://doi.org/10.1007/978-3-030-79150-6_31